(३) जन-जन को अचरज...

जन-जन को अचरज आयो, नेमी ने रथ मुडवायो;
नेमिकुंवर के परिणामों में, उपशम रस उमड़ायो उमड़ायो॥ टेक॥

नेमिकुंवर दुल्हा बन आये, छप्पन कोटि बराती लाये;
ब्याह को रङ्ग उमड़ायो..... उमड़ायो। जन-जन..... ॥ 1 ॥

पशुओं के क्रन्दन को सुनकर, जग की स्वारथ वृत्ति देखकर;
ब्याह का राग नशायो..... नशायो। जन-जन..... ॥ 2 ॥

समुद्रविजय अचरज में भारी, पुत्र विवाह की है तैयारी;
रङ्ग में भङ्ग कैसे आयो..... जी आयो। जन-जन..... ॥ 3 ॥

राजुल को बाबुल समझाये, बेटी दूजा ब्याह रचावें;
राजुल को नेमी मन भायो..... भायो। जन-जन..... ॥ 4 ॥

शोक बहुत राजुल के मन में किन्तु लगाया चित्त संयम में;
दीक्षा में चित्त रमायो..... रमायो। जन-जन..... ॥ 5 ॥